वर्ष-9 अंक-9, सितम्बर 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

(25 दिसंबर 1924 - 16 अगस्त 2018)

श्रद्धांजली

लता मंगेशकर

लता मंगेशकर ने लिखा- ऋषितुल्य पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के स्वर्गवास की वार्ता सुनके मुझे ऐसा लगा जैसा मेरे सर पर पहाड़ टूटा है, क्योंकि मैं उनको पिता समान मानती थी और उन्होंने मुझे बेटी बनाया था। मुझे इतने प्रिय थे कि मैं उनको दादा कहके बुलाती थी। आज मुझे ऐसा दुख हो रहा है जैसे, मेरे पिता के स्वर्गवास के समय हुआ था। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें।

अमिताभ बच्चन

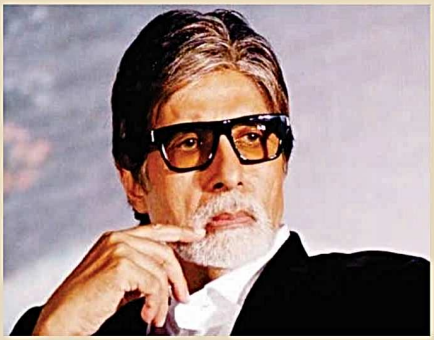

भावपूर्ण श्रद्धांजलि! एक महान नेता, प्रख्यात कवि, अद्‌भुत वक्ता व प्रवक्ता, मिलनसार व्यक्तित्व। बाबूजी के प्रशंसक और बाबूजी उनके .. उनकी भाषण कला बेजोड़ थीं और शब्दों का उपयोग शानदार था। वे उच्चारण की प्रतिभा से भरे हुए थे। शब्द की प्रस्तुति इसका अर्थ देने के लिए पर्याप्त थी। किसी को भाषा को समझने की आवश्यकता नहीं थी, वह उनकी प्रतिभा थी. संसद के सदनों में दिए गए उनके कुछ सार्वजनिक भाषण इसकी गवाही हैं।

सोनल मान सिंह

कला और कलाकार के प्रति उनके दिल में अनन्य श्रद्धा थी। वे जितने अच्छे व्यक्ति थे, उतने ही अच्छे कवि। मैने उनकी कविताओं का पाठ किया, उस पर अपनी प्रस्तुति भी दी। वे नहीं रहे, लेकिन वे सदा हमारे दिलों में बसे रहेंगे।

शारदा सिन्हा

आदरणीय अटल जी ! जो स्मृति में सदा अपनी मुखर हंसी लिए ही आते हैं, जिनकी स्मृति हमें इस गर्व का एहसास कराती है कि भारतीय राजनीति के इतिहास में एक ऐसा व्यक्तित्व हमारे बीच मौजूद था, जिसने कवितओं की भाषा में इस सांस्कृतिक व साहित्यिक देश का प्रतिनिधित्व किया, जिनका होना हमें वात्सल्य की भावना से भर देता था, उनका देहावसान हो गया। अटल जी की स्मृतियां अंतर्मन में इतनी गहरी हैं कि लगता है अपने शरीर के अंत के साथ ही वे स्मृतियां मिटेंगी । अमरता भी आपके नाम को पाना चाहती होगी। आपको कोटि-कोटि प्रणाम। यह देश आपके योगदान के लिए सदा आपका ऋणी रहेगा।

स्मृतियाँ जिनकी अटल हैं !
रहे सदा हितकारी !
अर्पित है श्रद्धांजली
हे अमर, अटल बिहारी!!

वर्ष - 9, अंक-9, सितम्बर 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
रवि परमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

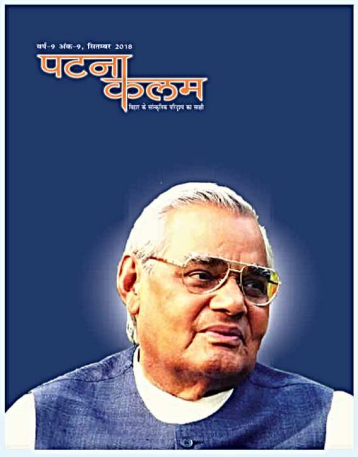

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

भारतीय राजनीति में कुछ ही राजनेता ऐसे हुए जिन्हें उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण याद किया जाता है। उन बिरले नेताओं में शामिल थे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी। जिन्हें जितना हम कुशल राजनेता और योग्य प्रशासक के रूप में याद करते हैं, उससे कहीं अधिक उनकी सांस्कृतिक छवि हमें सम्मोहित करती रही है। बिहार तो ऐसे भी ज्ञान की भूमि रही है। यहां राजा जनक को भी शासक के रूप में नहीं, उनके शास्त्र ज्ञान के कारण याद करते हैं। चाणक्य भी हमारे लिए कभी राजमंत्री नहीं रहे, बल्कि अर्थशास्त्र के ज्ञाता के रूप में उन्हें याद करते हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के राष्ट्रपति कार्यकाल से अधिक उनकी विद्वता की कहानियां हमें कंठस्थ हैं। जाहिर है पटना कलम का यह अंक कवि सांस्कृतिक पुरुष अटल बिहारी वाजपेयी को समर्पित है। इस अंक के माध्यम से हम उनकी रचनात्मक संवेदना को सामने लाने की कोशिश कर रहे हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी हमारे लिए एक समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं। वे ऐसे विरले राजनीतिज्ञों में शामिल थे, जिनकी कथनी और करनी में भेद नहीं किया जा सकता। उन्होंने जो बातें कहीं और जो काम किए, वे हमें हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे। राष्ट्र के प्रति गर्व उनके विचारों का मूल आधार था, जो उनकी राजनीति में दिखता रहा और उनकी कविताओं में भी:

मैं अखिल विश्व का गुरु महान, देता विद्या का अमर दान,
मैंने दिखलाया मुक्ति मार्ग
मैंने सिखलाया ब्रह्म ज्ञान।
मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर
मानव के मन का अंधकार क्या कभी सामने सका ठहर?
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर, सागर के जल में छहर-छहर
इस कोने से उस कोने तक कर सकता जगती सौरभ मैं।

इस कविता की प्रेरक पंक्तियां तीन प्रमुख पहलुओं को उद्घाटित करती हैं। पहला यह कि दुनिया में कहीं भी कोई जब मानव जीवन का अर्थ तलाशने की जुगत में जुटता है तो उसके उत्तर की खोज वह भारत के वैदिक ज्ञान में ही करता है। दूसरा सार तत्व यह है कि आध्यात्मिक दायरे से इतर भी युवा भारत को हमेशा यह स्मरण होना चाहिए कि आखिर भारत के ज्ञान ने कैसे पूरे विश्व को दैदीप्यमान किया? कविता का तीसरा सार तत्व है कि भारतीय मूल्यों वाली जीवनशैली में वाजपेयी की गर्वोक्ति एक मजबूत और अडिग पहचान पर आधारित थी जिसे मान्यता के लिए उदारवाद के पश्चिमी आदर्शों की कोई आवश्यकता नहीं थी। पहचान का यह सशक्त भाव उन नीतियों में भी झलकता है जो उनके नेतृत्व में भारत ने अपनाई थीं। पोखरण परमाणु परीक्षणों ने जहां भारत की शोध एवं विकास की क्षमताओं का प्रदर्शन किया तो इस अविस्मरणीय क्षण पर उनके भाषण में भारत की पहचान शांति के ऐसे पैरोकार की उभरी जो बाहुबल में यकीन नहीं रखता। उनकी नीतियों ने ऐसे भारत की तस्वीर पेश की जो अपनी आंतरिक क्षमताओं को लेकर आत्मविश्वास से लबरेज है।

पटना कलम के प्रस्तुत अंक में स्व.अटल बिहारी वाजपेयी के श्रद्धांजली स्वरूप उनकी चुनी हुई कविताएं प्रकाशित कर रहे हैं, जो निश्चय ही उनकी संवेदना को समझने में सहायक होगी।

रवि परमार
(रवि परमार)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

मेरे अटल जी

नरेन्द्र मोदी

अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे स्थिर हैं। अटल जी की ये स्थिरता मुझे झकझोर रही है, अस्थिर कर रही है। एक जलन सी है आंखों में, कुछ कहना है, बहुत कुछ कहना है लेकिन कह नहीं पा रहा। मैं खुद को बार-बार यकीन दिला रहा हूं कि अटल जी अब नहीं हैं, लेकिन ये विचार आते ही खुद को इस विचार से दूर कर रहा हूं। क्या अटल जी वाकई नहीं हैं? नहीं। मैं उनकी आवाज अपने भीतर गूंजते हुए महसूस कर रहा हूं, कैसे कह दूं, कैसे मान लूं, वे अब नहीं हैं।

वे पंचतत्व हैं। वे आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सबमें व्याप्त हैं, वे अटल हैं, वे अब भी हैं। जब उनसे पहली बार मिला था, उसकी स्मृति ऐसी है जैसे कल की ही बात हो। इतने बड़े नेता, इतने बड़े विद्वान। लगता था जैसे शीशे के उस पार की दुनिया से निकलकर कोई सामने आ गया है। जिसका इतना नाम सुना था, जिसको इतना पढ़ा था, जिससे बिना मिले, इतना कुछ सीखा था, वो मेरे सामने था। जब पहली बार उनके मुंह से मेरा नाम निकला तो लगा, पाने के लिए बस इतना ही बहुत है। बहुत दिनों तक मेरा नाम लेती हुई उनकी वह आवाज मेरे कानों से टकराती रही। मैं कैसे मान लूं कि वह आवाज अब चली गई है।

कभी सोचा नहीं था, कि अटल जी के बारे में ऐसा लिखने के लिए कलम उठानी पड़ेगी। देश और दुनिया अटल जी को एक स्टेट्समैन, धारा प्रवाह वक्ता, संवेदनशील कवि, विचारवान लेखक, धारदार पत्रकार और विजनरी जननेता के तौर पर जानती है। लेकिन मेरे लिए उनका स्थान इससे भी ऊपर का था। सिर्फ इसलिए नहीं कि मुझे उनके साथ बरसों तक काम करने का अवसर मिला, बल्कि मेरे जीवन, मेरी सोच, मेरे आदर्शों-मूल्यों पर जो छाप उन्होंने छोड़ी, जो विश्वास उन्होंने मुझ पर किया, उसने मुझे गढ़ा है, हर स्थिति में अटल रहना सिखाया है।

हमारे देश में अनेक ऋषि, मुनि, संत आत्माओं ने जन्म लिया है। देश की आजादी से लेकर आज तक की विकास यात्रा के लिए भी असंख्य लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है।

उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था -बाकी सब का कोई महत्त्व नहीं। इंडिया फर्स्ट-भारत प्रथम, ये मंत्र वाक्य उनका जीवन ध्येय था। पोखरण देश के लिए जरूरी था तो चिंता नहीं की प्रतिबंधों और आलोचनाओं की, क्योंकि देश प्रथम था।सुपर कंप्यूटर नहीं मिले, क्रायोजेनिक इंजन नहीं मिले तो परवाह नहीं, हम खुद बनाएंगे, हम खुद अपने दम पर अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक कुशलता के बल पर असंभव दिखने वाले कार्य संभव कर दिखाएंगे। और ऐसा किया भी।दुनिया को चकित किया। सिर्फ एक ताकत उनके भीतर काम करती थी- देश प्रथम की जिद।

काल के कपाल पर लिखने और मिटाने की ताकत, हिम्मत और चुनौतियों के बादलों में विजय का सूरज उगाने का चमत्कार उनके सीने में था तो इसलिए क्योंकि वह सीना देश प्रथम के लिए

धड़कता था। इसलिए हार और जीत उनके मन पर असर नहीं करती थी। सरकार बनी तो भी, सरकार एक वोट से गिरा दी गयी तो भी, उनके स्वरों में पराजय को भी विजय के ऐसे गगन भेदी विश्वास में बदलने की ताकत थी कि जीतने वाला ही हार मान बैठे।

अटल जी कभी लीक पर नहीं चले। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नए रास्ते बनाए और तय किए। "आंधियों में भी दीये जलाने"की क्षमता उनमें थी। पूरी बेबाकी से वे जो कुछ भी बोलते थे, सीधा जनमानस के हृदय में उतर जाता था। अपनी बात को कैसे रखना है, कितना कहना है और कितना अनकहा छोड़ देना है, इसमें उन्हें महारत हासिल थी।

राष्ट्र की जो उन्होंने सेवा की, विश्व में मां भारती के मान-सम्मान को उन्होंने जो बुलंदी दी, इसके लिए उन्हें अनेक सम्मान भी मिले। देशवासियों ने उन्हें भारत रत्न देकर अपना मान भी बढ़ाया। लेकिन वे किसी भी विशेषण, किसी भी सम्मान से ऊपर थे।

जीवन कैसे जीया जाए, राष्ट्र के काम कैसे आया जाए, यह उन्होंने अपने जीवन से दूसरों को सिखाया। वे कहते थे, "हम केवल अपने लिए ना जीएं, औरों के लिए भी जीएं... हम राष्ट्र के लिए अधिकाधिक त्याग करें। अगर भारत की दशा दयनीय है तो दुनिया में हमारा सम्मान नहीं हो सकता। किंतु यदि हम सभी दृष्टियों से सुसंपन्न हैं तो दुनिया हमारा सम्मान करेगी।"

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवन-स्तर को ऊपर उठाने के लिए वे जीवनभर प्रयास करते रहे। वे कहते थे "गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं है, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता"।

करोड़ों देशवासियों को इस विवशता से बाहर निकालने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किए। गरीब को अधिकार दिलाने के लिए देश में आधार जैसी व्यवस्था, प्रक्रियाओं का ज्यादा से ज्यादा सरलीकरण, हर गांव तक सड़क, स्वर्णिम चतुर्भुज, देश में विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, राष्ट्र निर्माण के उनके संकल्पों से जुड़ा था।

आज भारत जिस टेक्नोलॉजी के शिखर पर खड़ा है उसकी आधारशिला अटल जी ने ही रखी थी। वे अपने समय से बहुत दूर तक देख सकते थे - स्वप्न दृष्टा थे लेकिन कर्म वीर भी थे। कवि हृदय, भावुक मन के थे तो पराक्रमी सैनिक मन वाले भी थे। उन्होंने विदेश की यात्राएं कीं। जहाँ-जहाँ भी गए, स्थाई मित्र बनाये और भारत के हितों की स्थाई आधारशिला रखते गए। वे भारत की विजय और विकास के स्वर थे।

अटल जी का प्रखर राष्ट्रवाद और राष्ट्र के लिए समर्पण करोड़ों देशवासियों को हमेशा से प्रेरित करता रहा है। राष्ट्रवाद उनके लिए सिर्फ एक नारा नहीं था बल्कि जीवन शैली थी। वे देश को सिर्फ एक भूखंड, जमीन का टुकड़ा भर नहीं मानते थे, बल्कि एक जीवंत, संवेदनशील इकाई के रूप में देखते थे। "भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।"यह सिर्फ भाव नहीं, बल्कि उनका संकल्प था, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। दशकों का सार्वजनिक जीवन उन्होंने अपनी इसी सोच को जीने में, धरातल पर उतारने में लगा दिया। आपातकाल ने हमारे लोकतंत्र पर जो दाग लगाया था उसको मिटाने के लिए अटल जी के प्रयास को देश हमेशा याद रखेगा।

राष्ट्रभक्ति की भावना, जनसेवा की प्रेरणा उनके नाम के ही अनुकूल अटल रही। भारत उनके मन में रहा, भारतीयता तन में। उन्होंने देश की जनता को ही अपना आराध्य माना। भारत के कण-कण, कंकर-कंकर, भारत की बूंद-बूंद को, पवित्र और पूजनीय माना।

जितना सम्मान, जितनी ऊंचाई अटल जी को मिली उतना ही अधिक वह जमीन से जुड़ते गए। अपनी सफलता को कभी भी उन्होंने अपने मस्तिष्क पर प्रभावी नहीं होने दिया। प्रभु से यश, कीर्ति की कामना अनेक व्यक्ति करते हैं, लेकिन ये अटल जी ही थे जिन्होंने कहा,

"हे प्रभु! मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना।
गैरों को गले ना लगा सकूं, इतनी रुखाई कभी मत देना।"

अपने देशवासियों से इतनी सहजता और सरलता से जुड़े रहने की यह कामना ही उनको सामाजिक जीवन के एक अलग पायदान पर खड़ा करती है।

वे पीड़ा सहते थे, वेदना को चुपचाप अपने भीतर समाये रहते थे, पर सबको अमृत देते रहे- जीवन भर। जब उन्हें कष्ट हुआ तो कहने लगे- "देह धरण को दंड है, सब काहू को होये, ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोए।" उन्होंने ज्ञान मार्ग से अत्यंत गहरी वेदनाएं भी सहन कीं और वीतरागी भाव से विदा ले गए।

यदि भारत उनके रोम-रोम में था तो विश्व की वेदना उनके मर्म को भेदती थी। इसी वजह से हिरोशिमा जैसी कविताओं का जन्म हुआ। वे विश्व नायक थे। मां भारती के सच्चे वैश्विक नायक। भारत की सीमाओं के परे भारत की कीर्ति और करुणा का संदेश स्थापित करने वाले आधुनिक बुद्ध।

कुछ वर्ष पहले लोकसभा में जब उन्हें वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सांसद के सम्मान से सम्मानित किया गया था तब उन्होंने कहा था, "यह देश बड़ा अद्भुत है, अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा रहा है, अभिनंदन किया जा सकता है।"

अपने पुरुषार्थ को, अपनी कर्तव्यनिष्ठा को राष्ट्र के लिए समर्पित करना उनके व्यक्तित्व की महानता को प्रतिबिंबित करता है। यही सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए उनका सबसे बड़ा और प्रखर संदेश है। देश के साधनों, संसाधनों पर पूरा भरोसा करते हुए, हमें अब अटल जी के सपनों को पूरा करना है, उनके सपनों का भारत बनाना है।

नए भारत का यही संकल्प, यही भाव लिए मैं अपनी तरफ से और सवा सौ करोड़ देशवासियों की तरफ से अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, उन्हें नमन करता हूं।

निजी तौर पर मेरे लिए उनके जैसा कोई नहीं

नीतीश कुमार

पूरी दुनिया जानती है कि 70 के दशक में जेपी आंदोलन के हम छात्र नेताओं ने जेपी से राजनीति सीखी। लेकिन मुझे मेरे बाकी साथियों की तुलना में बिहार विधानसभा तक पहुंचने में काफी लंबा वक्त लगा। 1985 में बिहार विधानसभा में एंट्री के चार साल बाद 1989 में पहली बार संसद पहुंचा। वह ऐसा चुनाव था जिसने हिंदी हार्टलैंड की राजनीति को पूरी तरह से बदल दिया था। लेकिन अटल जी के साथ मेरी नजदीकी 1995 में मुंबई में बीजेपी की नेशनल एग्जीक्यूटिव मीटिंग से शुरू हुई। इस मीटिंग में हम सभी थे, जॉर्ज साहब भी थे। उस वक्त बीजेपी सहयोगियों की तलाश में थी और हमारी समता पार्टी विधानसभा में मिली हार के बाद बीजेपी जैसे साथी का साथ चाहती थी जो लालू यादव की अपराजेयता के मिथक को तोड़ सके।

लेकिन जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया वह यह था कि अटल जी और आडवाणी जी के नेतृत्व वाली बीजेपी यूनिफॉर्म सिविल कोड, राम मंदिर और कश्मीर से धारा 370 हटाने जैसे विवादित मुद्दों को किनारे रखने के हमारे सुझावों पर तैयार थी। इस वजह से हम 1996 में साथ चुनाव लड़ पाए और हम दो अंकों में सीटें जीतने में कामयाब रहे। बिहार में यह जीत काफी प्रभावपूर्ण थी। उस चुनाव के बाद से अटलजी अकसर मेरे पूर्व संसदीय क्षेत्र बाढ़ आया करते थे और अगर वाजपेयी आपके लिए प्रचार करने आ रहे हैं तो आप निश्चिंत हो जाएं क्योंकि आपके राजनीतिक आलोचक भी बैठकर उन्हें सुनेंगे।

उनसे घनिष्ठ संबंध 1998 में शुरू हुए जब मुझे उनकी कैबिनेट में रेलवे मंत्री बनाया गया। हालांकि हमारी सरकार थोड़े समय बाद अगले साल ही गिर गई। अकसर खुद को अटल और बिहारी कहते हुए चुटकी लेने वाले वाजपेयी ने मेरे तत्कालीन संसदीय क्षेत्र बाढ़ को विद्युत परियोजना दी। एक हजारीबाग को भी मिली। जॉर्ज साहब के संसदीय क्षेत्र में आने वाले राजगीर में गोला-बारूद फैक्ट्री लगाई गई। तब से लेकर राज्य के बंटवारे यानी कि साल 2000 तक वित्त, रक्षा और रेलवे जैसे तमाम मुख्य मंत्रालय बिहार के सांसदों को दिए जाते रहे।

साल 1999 में गैसल हादसे में दो ट्रेनों के टकराने से करीब 300 लोगों की मौत हो गई थी। दुर्घटनास्थल का दौरा करने के बाद मुझे एहसास हुआ कि रेलवे स्टाफ की लापरवाही की वजह से लोगों का जान से हाथ गंवाना पड़ा। मैंने इस्तीफा दे दिया लेकिन अटल जी उसे स्वीकार नहीं करना चाहते थे। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मुझे वास्तव में उनसे मिन्नतें करनी पड़ीं।

1999 में संसदीय चुनाव के दौरान बैलेट पेपर से वोटिंग होती थी। मतगणना में कम से कम दो-तीन दिन का वक्त लगता था और ऐसी खबरें थीं कि मैं चुनाव हार रहा हूं। चिंतित और परेशान वाजपेयी ने मुझे फोन किया और जब मैंने उन्हें बताया कि परिणाम मेरे पक्ष में हैं तो उन्होंने निश्चिंत होकर फोन रख दिया।

वह मेरे और बिहार के लिए काफी दरियादिल थे। हमारे पास संसाधन कम थे और अगर योजना आयोग हमारे प्रस्तावों का विरोध करता या अड़ंगा लगाता था तो मैं भागकर अटल जी के पास जाता था और वे अपने अनोखे अंदाज में मुझे आश्वस्त करते थे कि सबकुछ ठीक हो जाएगा। अगर वह 2004 के बाद भी अगले पांच सालों के लिए पीएम बने रहते तो मेरा विश्वास है कि बिहार में और ज्यादा विकास हो पाता।

बिहार के लोग कभी उन्हें नहीं भूल पाएंगे क्योंकि उन्होंने हमें स्वर्णिम चतुर्भुज राजमार्ग और कोशी नदी समेत तीन बड़े पुल दिए जिन्होंने लोगों का आना-जाना आसान बना दिया।

अगर अटल जी का नेतृत्व नहीं मिला होता तो मैं उन मूलभूत सिद्धांतों को नहीं अपना पाता जिन्हें मैं आज भी शासन प्रणाली में लागू करता हूं। उन्होंने सबको यह बताया कि आप विनम्र रहते हुए भी दूसरे नेताओं का विरोध कर सकते हैं। उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी पत्रकारों के कठिन से कठिन सवालों के जवाब दिए। हमारे संसदीय प्रजातंत्र में उनका जन्मजात और अटूट विश्वास व साथियों का सम्मान उनका ट्रेडमार्क था।

अटल बिहारी वाजपेयी ने बतौर पीएम 1996 में 13 दिन, 1998 में 13 महीने और 1999 में पांच सालों तक देश की बागडोर संभाली। बाद में उन्होंने अपनी बिगड़ती सेहत को देखते हुए खुद को राजनीति से अलग कर लिया।

अटल जी आपने मुझे जो भी सिखाया मैं उसे आज भी गुनता हूं। आपका जाना अपूरणीय क्षति है

ध्रुवतारे की तरह मार्गदर्शन करते रहेंगे अटल जी

सुशील कुमार मोदी

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन से मर्माहत उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने अपनी श्रद्धांजलि संदेश में कहा कि आवाज का जादूगर हमेशा हमेशा के लिए सो गया। उन्होंने लिखा कि पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी का निधन स्वाधीनता के बाद की भारती राजनीति के आकाश पर उदित सबसे चमकीले नक्षत्र का अवसान है। उनके लम्बे सार्वजनिक जीवन की शुचिता, अदभुत ओजस्विता से भरी भाषण शैली, राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाली कूटनीति और 50 साल के संसदीय जीवन में गढ़े गए शिखर प्रतिमान ध्रुवतारे की तरह सदियों तक मार्गदर्शन करते रहेंगे। हम सबके प्रेरणा पुरुष अटल जी काल के कपाल पर अमर गीत लिख गए हैं।

सुशील मोदी ने लिखा कि 20 साल पहले मई, 1998 में दूसरा सफल परमाणु परीक्षण कर शक्तिशाली भारत के उद्घोष से दुनिया को स्तब्ध करने वाले तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वर्ण चतुर्भुज उच्चपथ योजना लागू कर ढांचागत विकास की गति तेज की थी। अकसर विनोदपूर्वक स्वयं को बिहारी कहने वाले अटल जी की सरकार में बिहार के मंत्रियों की संख्या सबसे ज्यादा थी।

उपमुख्यमंत्री ने वाजपेयी जी के साथ अपने आत्मीय संबंधों को याद करते हुए कहा वे समृतियां सदा विह्वल बनाती रहेंगी। उन्होंने खासकर 13 अप्रैल 1986 को अपने विवाह समारोह में वाजपेयी जी के पधारने और उस अवसर पर आशिर्वचन के रुप में दिए गए उनके वक्तव्य को भी याद किया। उस आत्मीयतापूर्ण भाषण में ही वाजपेयी जी ने सुशील मोदी को मुख्यधारा की राजनीति में आने का औपचारिक आमंत्रण दिया था। "पटना कलम" के पाठकों के लिए खासतौर से प्रस्तुत है उक्त भाषण के अंश-

देवियों और सज्जनों,

आशीर्वाद देने के लिए पहले ऐसे लोग बुलाए जा रहे हैं, जो कभी विवाह के बंधन में बंधे ही नहीं। इसलिए मैं आशीर्वाद देने की औपचारिकता नहीं करूंगा, मैं इस अवसर पर अपना आनंद प्रकट कर रहा हूं। यह एक अनूठा प्रसंग बन गया है। उत्तर और दक्षिण का मिलन हो रहा है। अंतरप्रातीय, अंतरभाषीय, अंतर उपासना पद्धतीय इस विवाह में वधू केरल की है। केरल के निकट ही कुमारी कन्या सदियों से साधना करती रही है। पाटलिपुत्र हिमालय से जुड़ा हुआ है, हिमालय के सिर पर कन्याकुमारी की दृष्टि रही है। यह प्रेम पहले हुआ है, विवाह बाद में हुआ है।

पंडितजी ने ठीक कहा था कि विवाह के बाद प्रेम हो जाए वो भी ठीक है, लेकिन अगर प्रेम की परिणति विवाह में हो जाए तो बहुत अच्छा है। मैं बधाई देना चाहता हूं, विशेष कर ऐसे परिवारों को, जिसमें लड़के-लड़की इकट्ठा होकर विवाह कर लेते हैं।

सुशील जी ने अंततोगत्वा विवाह का फैसला किया ही, यह अपने में ही एक महत्वपूर्ण बात है। वो अभी तक संघर्ष करते रहे, लेकिन इस विवाह को परिवारों ने माना, इसमें शामिल हैं, आनंदित हैं, आज इतने बड़े समारोह में हमसब आनंदपूर्वक भाग लेने के लिए इकट्ठा हुए, यह अपने में एक बड़ी बात है।

समाज कुरीतियों में जकड़ा हुआ है, प्रेमियों के बीच भी दीवारें खड़ी कर दी जाती है। जो उन दीवारों को तोड़कर विवाह करते हैं, उन्हें परिवारों की मान्यता नहीं मिलती, समाज का आशीर्वाद नहीं मिलता है, लेकिन इस विवाह को समाज का पूरा आशीर्वाद प्राप्त है। इस दृष्टि से यह विवाह आगे के लिए पथ-प्रदर्शक बनेगा, यह मैं कामना करता हूं।

मैं एक और स्वार्थ से आया हूं। अब सुशीलजी विद्यार्थी नहीं रहे और श्रीमती मोदी, वो तो पढ़ाती हैं। मैं उन्हें निमंत्रण दे रहा हूं कि वो हमेशा कर्मक्षेत्र में रहे हैं, सघर्ष के क्षेत्र में रहे हैं, विद्यार्थी परिषद की उन्होंने काफी सेवा की, अब अगर वो उपयुक्त समझे तो राजनीतिक क्षेत्र में आकर हम लोगों का हाथ बंटाएं।

काव्य की अटल-आभा

गिरीश पंकज

अटल जी के बारे में हर कोई यह बात कहता रहा है कि वे राजनीति में नहीं होते तो हिंदी साहित्य-जगत के एक बड़े काव्य-हस्ताक्षर के रूप में प्रख्यात होते। बावजूद इसके यह भी कहा जा सकता है कि अपने साहित्यिक संस्कारों के कारण ही उन्होंने राजनीति को शुचितापूर्ण बना दिया। यही कारण है कि उनके जाने के बाद भी उनके समग्र व्यक्तित्व पर विमर्श हो रहा है और उनके साहित्यिक अवदान को भी केंद्र में रखकर विचार किया जा रहा है। मॉरीशस में संपन्न 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन (18-20 अगस्त, 2018) में भी विश्वभर से एकत्र हुए हिंदी-प्रेमियों ने अटल जी के हिंदी-प्रेम और उनके कवि-रूप का स्मरण किया। मॉरीशस सरकार ने तो अपने बन चुके सायबर टॉवर का नाम 'अटल बिहारी वाजपेयी टॉवर' रखने की घोषणा कर दी। जब मॉरीशस में दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ था, तब अटल जी ने जो कविता लिखी थी, वह आज भी स्मरणीय है-

पोर्टलुई के घाट पर, नवपंडों की भीर,
रोली,अक्षत, नारियल, सुरसरिता का नीर।
सुरसरिता का नीर, लगा चंदन का घिस्सा,
भैयाजी ने औरों का भी हड़पा, हिस्सा।
कह कैदी कविराय,
जयतु जय शिवसागर जी,
जय भगवती जागरण,
निरावरण जय नागर जी।

अटल जी की समग्र हिंदी कविताएं बेहद महत्त्वपूर्ण हैं। यह अलग बात है कि हमारी तथाकथित साहित्य-आलोचना के बदरंग चश्मे ने अटल जी की शुभ्र-भाव वाली कालजयी कविताओं की अनदेखी करने की कोशिश की लेकिन उनकी साहित्य-आभा निरंतर प्रभासित होती रही। साहित्य की वह 'अटल-आभा' रह-रह कर दीप्त होती रही। वे अब साहित्यिक व्यक्तित्व के धनी एवं सहज-सरल राजनीतिज्ञ के रूप में चिरस्मरणीय हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में अटल जी के भाषण के बाद से ही भारत की यह मांग जोर पकड़ने लगी कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र की अधिकृत भाषा बने। अभी वहां छह भाषाओं को मान्यता मिली हुई है। हिंदी अब तक संघर्ष कर रही है। अटल जी की पहल से हिंदी के पक्ष में एक सकारात्मक माहौल बना। वे अपने अधिकांश भाषण हिंदी में ही देते रहे। उनके भाषण इतने रंजक होते थे कि विपक्षी नेता भी सुनकर वाह-वाह कर उठते थे। चुनावी सभाओं में विपक्षी भी उनका भाषण सुनने जाया करते थे। उनके भाषणों में तथ्य होते थे, सचाई होती थी, लालित्य होता था।

परिहास भी प्रचुर मात्रा में होता था। वे अपने विरोधियों की आलोचना करते वक्त भी हमेशा मर्यादित रहे। इसीलिए आज सब उन्हें आदर से याद करते हैं। वे हमेशा याद किए जाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र में सबसे पहले हिंदी में भाषण देकर हिंदी की पताका को विश्वव्यापी बनाने वाले अटल जी उन कुछेक राजनेताओं में शामिल हैं जो अच्छे लेखक भी थे। हालांकि अनेक लेखक-नेता गद्य पर अधिक केंद्रित थे पर अटल जी का काव्य-व्यक्तित्व ही अधिक सामने आता है। उनकी ये पंक्तियां देखें-

गूंजी हिंदी विश्व में स्वप्न हुआ साकार,
राष्ट्र संघ के मंच से हिंदी का जैकार।
हिंदी का जैकार हिंदी हिंदी में बोला,
देख स्वभाषा-प्रेम विश्व अचरज में डोला।
कह कैदी कविराय मेम की माया टूटी,
भारत माता धन्य स्नेह की सरिता फूटी।

अटल जी की कविताएं भारतीय मन-मस्तिष्क को रूपायित करती हैं। वे सार्थक कविता की तरह बोधगम्य थे। जैसे सहज-सरल थे, वैसी ही उनकी कविताएं हैं। उन्होंने कालजयी कविताएं लिखीं। आपातकाल के दौरान लिखी गई उनकी कविताएं 'कैदी कविराय की कुण्डलियां' के नाम से प्रकाशित हुईं। उनकी अनेक कविताएं लोगों के मानस पटल पर अंकित हैं। इन कविताओं को हम साहित्य के निकष पर भी खरा पाते हैं। उनकी एक कविता काफी लोकप्रिय हुई। जैसे - टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

सत्य का संघर्ष सत्ता से,
न्याय लड़ता निरंकुशता से,
अंधेरे ने दी चुनौती है,
किरण अंतिम अस्त होती है।
दीप निष्ठा का लिए निष्कंप
वज्र टूटे या उठे भूकंप,
यह बराबर का नहीं है युद्ध,
हम निहत्थे, शत्रु है सन्नद्ध।

आपातकाल के दौरान देश के समस्त बड़े विपक्षी नेता विभिन्न जेलों में ठूंस दिए गए थे। भवानी प्रसाद मिश्र जैसे अनेक क्रांतिकारी कवि भी बंद कर दिए गए थे। जेल में उन्होंने कविता लेखन की 'त्रिकाल-संध्या' की। यानी उन्होंने प्रतिदिन तीन कविताएं लिखीं। बाद में ये कविताएं पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हुईं। उनकी तरह अटल जी को जेल में अनेक कविताएं लिखने का अनुकूल अवसर मिला। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण कविताएं रचीं, वे भी कुण्डलियों के रूप में। ये कविताएं बाद में कुछ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर चर्चित भी हुईं। 'कैदी कविराय की कुण्डलियां'- इस संग्रह को देखने से साहित्यानुरागियों को अटल जी की छांदसिक प्रतिभा का पता चलता है। कुण्डलियां छंद लिखने का काम कोई कुशल कवि ही कर सकता है। इंदिरा गांधी के तानाशाही रवैये के कारण तब देशभर में प्रशासन अन्याय-अत्याचार कर रहा था। अटल जी लिखते हैं-

दिल्ली के दरबार में कौरव का है जोर,
लोकतंत्र की द्रौपदी रोती नयन निचोर।
रोती नयन निचोर, नहीं कोई रखवाला,
नए भीष्म, द्रोणों ने मुख पर ताला डाला।
कह कैदी कविराय बजेगी रण की भेरी,
कोटि-कोटि जनता न रहेगी बनकर चेरी।

अटल जी ने अपनी विद्रोही कविताओं में कदम-कदम पर सत्ता की निरंकुशता और लोक की पीड़ा को उकेरने का काम किया। वे एक तरह से प्रतिरोध के कवि हैं। वे व्यंग्य भी खूब करते हैं। अन्याय पर तीखा प्रहार उनकी कविताओं का सहज प्रदेय रहा। जीवन को उत्साह-उमंग से भर देने वाली उनकी अनेक कविताएं अमर हैं। एक बानगी देखें -

हर तरह के शस्त्र से है सज्ज,
और पशुबल हो उठा निर्लज्ज।
किन्तु फिर भी जूझने का प्रण,
पुनः अंगद ने बढ़ाया चरण,
प्राण-पण से करेंगे प्रतिकार,
समर्पण की मांग अस्वीकार।
दांव पर सब कुछ लगा है, रुक नहीं सकते;
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

अटल जी के जीवन में पारदर्शिता थी। उन्होंने अनेक बातें संकेतों में भी कहीं। समझने वाले उन्हें समझते भी थे। वे राजनीतिक जीवन में शुचिता और समरसता के उदाहरण थे। उन्होंने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में देश को एक दिशा दी। भारत को विकास के नूतन आयाम दिए। पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध बनें, इस दिशा में उनकी पहल को पूरी दुनिया ने सराहा। आज भारत उसी का अनुसरण करने की कोशिश कर रहा है। अटल जी आस्था के कवि हैं। वे हारने से भी निराश नहीं होते, मुसीबतों का डट कर मुकाबला भी करते हैं। उनकी इस कविता का संदेश यही है,

बाधाएं आती हैं आएं
घिरें प्रलय की घोर घटाएं,
पांवों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएं,
निज हाथों में हंसते-हंसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

उनकी एक और महत्वपूर्ण कविता है जो भारत का महिमा-गान करती है-

मैं अखिल विश्व का गुरु महान,
देता विद्या का अमरदान,
मैंने दिखलाया मुक्ति मार्ग
मैंने सिखलाया ब्रह्म ज्ञान।
मेरे वेदों का ज्ञान अमर,
मेरे वेदों की ज्योति प्रखर
मानव के मन का अंधकार
क्या कभी सामने सका ठहर?

आज राजनीति अलग दिशा में बह रही है। सत्ता पाने के बाद नेताओं का गुरूर देखने लायक होता है। छुटभैया भी बड़भैया बन जाता था। अटल जी इस चरित्र को समझते थे। वे राजनीति में भी नैतिक मूल्यों को स्थापित करना चाहते थे। ओहदेदार बनने के बाद अनेक लोग समाज से कटते चले जाते हैं, ऐसे लोगों पर भी उनकी एक लंबी कविता है। उसका एक अंश देखें-

मेरे प्रभु !
मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना,
गैरों को गले न लगा सकूं,
इतनी रुखाई कभी मत देना।

साहित्य क्या है, वह लोकमंगल का कार्य करता है। भटके हुए जन को राह दिखाता है। टूटे हुए व्यक्ति के अन्तस् में आस्था भरता है। जीवन में नए रंग भरने का काम कोई भी बड़ी रचना करती है। अटल जी की अनेक कविताएं इसी भावभूमि पर सृजित हुई हैं। अटल जी की चर्चित कृति 'मेरी इक्यावन कविताएं' को देखें तो हम पाते हैं कि इस संग्रह की समस्त कविताएं आदमी को इनसान बनाने की प्रवृत्ति रखती हैं। फिर चाहे वह 'आओ फिर से दिया जलाएं' हो या 'गीत नया गाता हूं' हो। अन्य चिर स्मरणीय कविताओं के कुछ शीर्षक देखें, जो अपने कथ्य को स्वत: स्पष्ट करते चलते हैं। जैसे, 'न मैं चुप हूं, न गाता हूं', 'गीत नया गाता हूं', 'ऊंचाई', 'दूध में दरार पड़ गई', 'मन का संतोष', 'झुक नहीं सकते', 'जीवन बीत चला', 'मौत से ठन गई', 'राह कौन-सी जाऊं', 'हिरोशिमा की पीड़ा', 'आओ मन की गांठें खोलें' आदि समस्त कविताओं में जो विमर्श है, वह सामान्य पाठक को भी नवीन ऊर्जा से आप्लावित कर देता है।

कविता का काम ही है कि वह हमें नित नवीन करती चले। अटल जी के साहित्य की यही विशेषता है कि वह संस्कार देता चलता है। उनकी कविताएं प्रवाहमान हैं। पाठक उनके साथ गहरा तादात्म्य स्थापित करके बहता चला जाता है। एक पंक्ति में कहें तो अटल जी प्रबोधन के कवि हैं। उनकी कविताएं हमें प्रबुद्ध करती हैं, अन्तस् को शुद्ध करती हैं। उनकी कविताएं हमें राष्ट्र से प्रेम करना सिखाती हैं। वे देश से अटूट प्रेम करते हैं इसलिए देश को महान भी देखना चाहते हैं। वे लोकतंत्र की विसंगतियों को देखते हुए एक जगह कहते हैं -

पंद्रह अगस्त का दिन कहता,
आजादी अभी अधूरी है
सपने सच होने बाकी हैं,
रावी की शपथ न पूरी है...
...उस स्वर्ण दिवस के लिए
आज से कमर कसें बलिदान करें।
जो पाया उसमें खो न जाएं
जो खोया उसका ध्यान करें।

चंद पंक्तियों में अटल जी कितना कुछ कह जाते हैं। साहित्य से राजनीति में सक्रिय कुछ कवियों का मूल्यांकन होता रहा है लेकिन हिंदी आलोचना ने अटल जी के साहित्यिक अवदान की उपेक्षा की। उनकी कविताओं पर काम होना चाहिए, क्योंकि यह अनुकूल समय है। उनके साहित्य पर शोध हो, विमर्श हो और वे जैसी छान्दसिक कविताएं करते थे, वैसी कविताओं की वापसी का वातावरण भी बने। लता मंगेशकर और जगजीत सिंह जैसे कुछ गायकों ने उनकी रचनाओं को स्वर दिया पर आलोचकों ने उन्हें अनदेखा किया। लेकिन अब यह भूल-गलती सुधारी जानी चाहिए। अपनी एक कविता में वे जीवन के सत्य को स्वीकार भी करते हैं और कहते हैं-

जीवन की ढलने लगी सांझ
उमर घट गई
डगर कट गई
जीवन की ढलने लगी सांझ।
सपनों में मीत
बिखरा संगीत
ठिठक रहे पांव और झिझक रही झांझ।
जीवन की ढलने लगी सांझ।

लेकिन हम लोग यही चाहते थे कि यह सांझ कभी न आए, कभी न आए, लेकिन वह आ ही गई। उनकी एक और कविता है 'मौत से ठन गई'। इसकी शुरू की कुछ पंक्तियों में जीवन-दर्शन उतर आया है,

''ठन गई
मौत से ठन गई
... मैं जी भर जिया,
मैं मन से मरूं
लौट कर आऊंगा
कूच से क्यों डरूं?
देख तेवर तूफान का,
तेवरी तन गई।
मौत से ठन गई।''

तो ऐसे कवि थे अटल जी, जो मौत से भी टकराते थे। वे चले गए हैं लेकिन उनका रचनात्मक अवदान कालजयी है। उनकी साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक स्मृतियों का संरक्षण करके ही हम भविष्य के महामानव तैयार कर सकते हैं। जिस सामाजिक-राजनीतिक शुचिता के पर्याय थे अटल जी, उसकी स्थापना तभी संभव है जब अटल-साहित्य नए बच्चे तक भी पहुंचे। एक बड़ी परियोजना बना कर उनके साहित्य का समस्त भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया जाना चाहिए। उनके नाम से साहित्य के विभिन्न पुरस्कार भी स्थापित किए जा सकते हैं। अंत में, साहित्य के इस अटल-काव्य-व्यक्तित्व को मैं इन शब्दों में रेखांकित कर रहा हूं-

नवल रहे, वह धवल रहे
अमर हमारे अटल रहे
अटल बिहारी नाम है जिनका
कीचड़ में भी कमल रहे
कौन हिला पाया पर्वत को
अटल हमेशा अचल रहे।

विश्व हुआ दैदिप्यमान

कृष्ण कुमार ऋषि

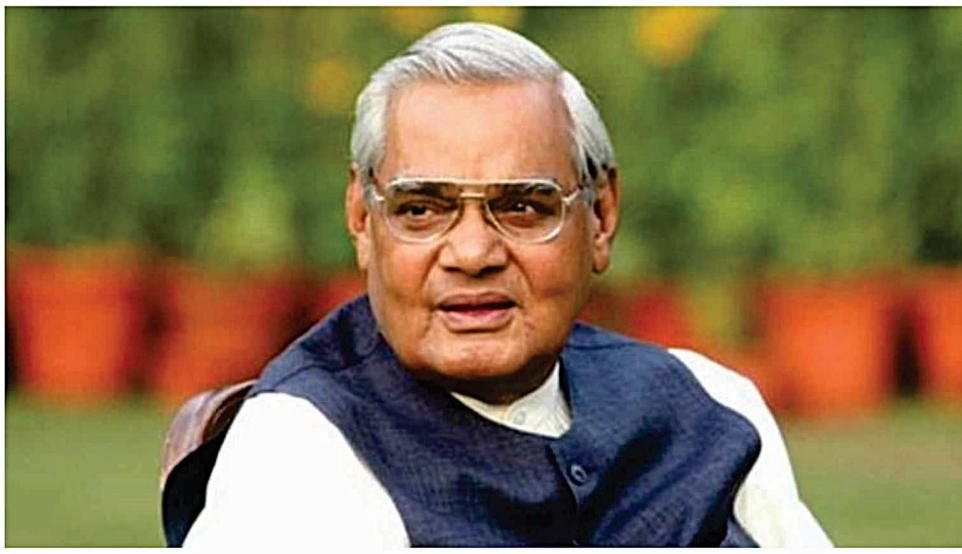

उनकी अभिलाषा थी कि भारत भय, भूख, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो। इसी को लक्ष्य मान कर सरकार में आने के बाद उन्होंने नीतियां बनायीं। अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति में अजातशत्रु राजनेता माने जाते थे। वे एक ऐसे नेता थे, जिनकी दूसरे दलों के लोग भी इज्जत करते थे, उनकी वक्तृता और सूझ-बूझ के सभी कायल थे। वे संतुलित, सधी हुई भाषा, रोचक शैली और तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात रखते थे। मोरारजी देसाई सरकार में उन्होंने विदेशमंत्री का दायित्व संभाला। विदेशमंत्री रहते हुए उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी में अपना भाषण देकर देश को एक नई पहचान दिलायी, एक नया इतिहास रचा।

प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने देश के आमलोगों की जरुरतों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने कई साहिसक कदम उठाए। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के जरिए भारत के कोने-कोने तक सड़कों का जाल बिछाने और हर घर तक बिजली पंहुचाने संबंधी विद्युत नियामक आयोग की योजनाओं को गति दी। नदियों को आपस में जोड़कर जल संबंधी समस्याओं से निपटने का विचार दिया, कावेरी जल विवाद को सुलझाया। उन्हीं की योजनाओं और उनकी सूझ-बूझ का नतीजा था कि देश अपनी बेहतरी के दौर में प्रवेश कर सकी। सबसे उल्लेखनीय काम उन्होंने भारत को परमाणु संपन्न देश बनाकर किया। दुनिया के तमाम देशों की कड़ी नजर के बावजूद उनके कार्यकाल में पोखरण परमाणु परीक्षण किया गया। हालांकि उसके बाद भारत को दुनिया के शक्तिशाली देशों की टेढ़ी नजर का सामना करना पड़ा, पर अटल बिहारी वाजपेयी ने उसकी परवाह नहीं की। इस तरह भारत परमाणु शक्ति के रूप में दुनिया में पहचाना जाने लगा। उन्होंने एक ऐसे देश को खडा किया जो आर्थिक प्रतिबंधों से जूझने के लिए तैयार है और साझेदारी के फायदों को भी समझता है। उन्होंने अमेरिका के साथ फायदेमंद साझेदारी की शुरुआत की और भारत-अमेरिका संबंधों की धुरी को हमेशा के लिए बदल दिया। दूसरे देशों के साथ मजबूत रिश्ते बनाने के लिए उन्होंने अनेक व्यापारिक और सांस्कृतिक समझौते किए। पाकिस्तान के साथ लंबे समय से चली आ रही कड़वाहट को समाप्त करने के लिए उन्होंने दोनों देशों के बीच आमलोगों की आवाजाही बरकरार रखने पर जोर दिया। रेल और बस सेवाएं शुरू की और वे खुद भी बस में बैठ कर पाकिस्तान गए। उनकी नीतियों में मानवता के सूत्र कहीं टूटते नजर नहीं आए। वे न सिर्फ कुशल और सफल राजनेता थे, दृढनिश्चयी शासक और मन मोहने वाले कवि भी थे, वे सजग- विचारशील पत्रकार भी थे। उनके जाने से राजनीति के एक युग का अंत माना जा सकता है।

आदरणीय वाजपेयी जी को सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब भारतीय लोकाचार की समृद्ध विरासत को पुनर्जीवित करने की कोशिश में सक्रिय होंगे। इसकी शुरुआत बालपन से ही की जानी चाहिए। नई पीढ़ी को उन धर्मग्रंथों से भी रूबरू कराना चाहिए जिनमें हमारी समृद्ध विरासत और ज्ञान का खजाना समाहित है। आमतौर पर वैज्ञानिक शिक्षा के नामपर अपनी भावी पीढी को हमने अपनी पारंपरिक विरासत और नैतिकता की सामान्य शिक्षा से दूर रखने की सफल कोशिश की है। आज भारत में स्कूली पढ़ाई ऐसे किसी अनुभव के बिना ही हो जाती है। आमतौर पर लोगों का मोहभंग तब होता है जब अवसरों की कमी के साथ यह भावना बलवती होती है कि तंत्र अमीरों और ताकतवर लोगों की मुट्ठी में है। सभी के लिए अवसरों की समानता सुनिश्चित करने और न्यायिक तंत्र सभी के लिए एकसमान बनाने से इस भावना को दूर किया जा सकता है। इन पहलुओं के अनुरूप नीतिगत कदम उठाकर ही हम भारत को अटल बिहारी वाजपेयी के सपनों के भारत और विश्व गुरु के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

अटल जी की कविताएं

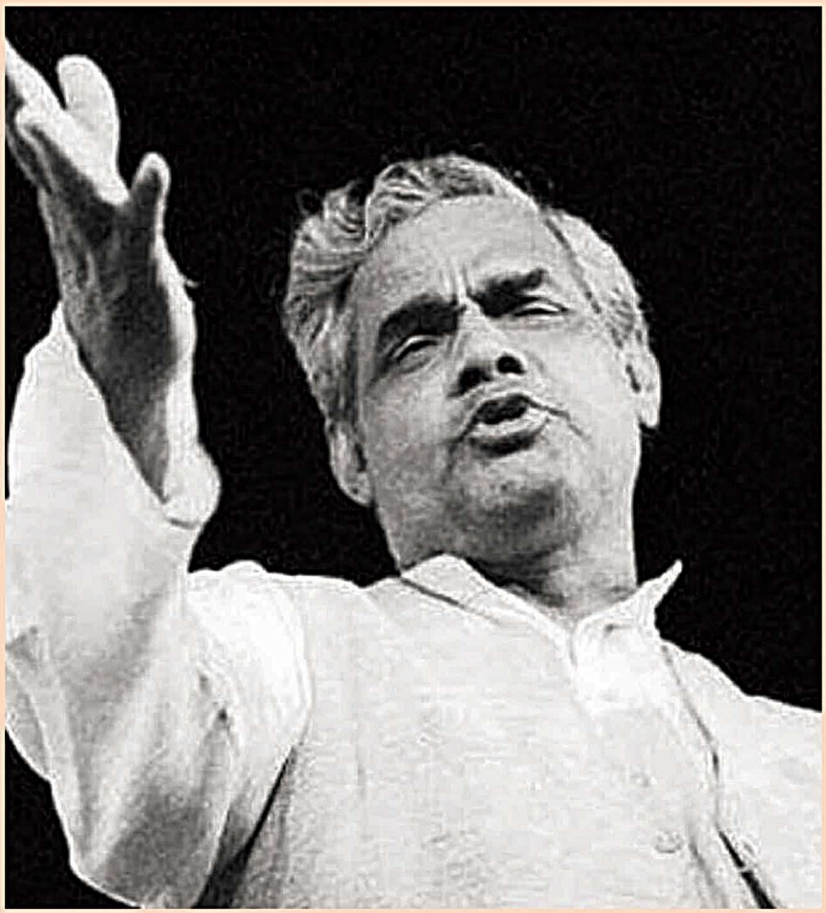

न मैं चुप हूँ न गाता हूँ

न मैं चुप हूँ न गाता हूँ

सवेरा है मगर पूरब दिशा में
घिर रहे बादल
रूई से धुंधलके में
मील के पत्थर पड़े घायल
ठिठके पाँव
ओझल गाँव
जड़ता है न गतिमयता

स्वयं को दूसरों की दृष्टि से
मैं देख पाता हूँ
न मैं चुप हूँ न गाता हूँ

समय की सदर साँसों ने
चिनारों को झुलस डाला,
मगर हिमपात को देती
चुनौती एक दुर्ममाला,

बिखरे नीड़,
विहँसे चीड़,
आँसू हैं न मुस्कानें,
हिमानी झील के तट पर
अकेला गुनगुनाता हूँ।

गीत नहीं गाता हूँ

गीत नहीं गाता हूँ
बेनकाब चेहरे हैं,
दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलस्म, आज सच से भय खाता हूँ।

गीत नहीं गाता हूँ
लगी कुछ ऐसी नजर,
बिखरा शीशे सा शहर,
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूँ।

गीत नहीं गाता हूँ।
पीठ में छुरी सा चाँद,
राहु गया रेखा फाँद,
मुक्ति के क्षणों में बार-बार बँध जाता हूँ।
गीत नहीं गाता हूँ।

गीत नया गाता हूँ

गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर
झरे सब पीले पात कोयल की कुहुक रात

प्राची में अरुणिम की रेख देख पाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी
अन्तर की चिर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा,

काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

कदम मिलाकर चलना होगा

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रूदन में, तूफानों में,
अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

उजियारे में, अंधकार में,
कल कहार में, बीच धार में,
घोर घृणा में, पूत प्यार में,
क्षणिक जीत में, दीर्घ हार में,
जीवन के शत-शत आकर्षक,
अरमानों को ढलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

सम्मुख फैला अगर ध्येय पथ,
प्रगति चिरंतन कैसा इति अब,
सुस्मित हर्षित कैसा श्रम श्लथ,
असफल, सफल समान मनोरथ,
सब कुछ देकर कुछ न मांगते,
पावस बनकर ढ़लना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

कुछ काँटों से सज्जित जीवन,
प्रखर प्यार से वंचित यौवन,
नीरवता से मुखरित मधुबन,
परहित अर्पित अपना तन-मन,
जीवन को शत-शत आहुति में,
जलना होगा, गलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com